Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

राजस्थान का भूगोल

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: RJPM06

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

राजस्थान का भूगोल

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

RAS DLP विषय सूची (Contents)

1.	**राजस्थान : सामान्य परिचय**	**5-9**
2.	**भूगर्भिक संरचना**	**10-18**
3.	**भू-आकृतिक प्रदेश**	**19-29**
4.	**अपवाह तंत्र एवं जल संसाधन**	**30-54**
	4.1 अपवाह तंत्र	30
	4.2 जल संसाधन	38
	4.3 सिंचाई परियोजनाएँ	40
5.	**राजस्थान की जलवायु**	**55-63**
	5.1 जलवायु को प्रभावित करने वाले तत्त्व	55
	5.2 राजस्थान की जलवायु की प्रमुख विशेषताएँ	55
	5.3 राजस्थान के जलवायु प्रदेश	60
6.	**प्राकृतिक वनस्पति एवं मृदाएँ**	**64-82**
	6.1 वनों के प्रकार	64
	6.2 वन रिपोर्ट	66
	6.3 वनों का आर्थिक महत्त्व	68
	6.4 वनों का संरक्षण	69
	6.5 सम्मान एवं पुरस्कार	69
	6.6 राजस्थान में मृदा के प्रकार एवं वितरण	71
	6.7 मृदा की समस्याएँ	74

7. वन्य जीव एवं जैव विविधता **83-98**

7.1 राजस्थान में वन्य जीव 83

7.2 वन्य जीव संरक्षण 84

7.3 राजस्थान के राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य जीव अभयारण्य 87

7.4 जैव विविधता 91

8. राजस्थान में कृषि एवं पशुपालन **99-132**

8.1 राजस्थान में कृषि 99

8.2 कृषि उपजों का विवरण 102

8.3 राजस्थान में कृषि के प्रकार 108

8.4 राजस्थान में कृषि की समस्याएँ 109

8.5 कृषि सुधार कार्यक्रम व योजनाएँ 110

8.6 कृषि संबंधित संस्थाएँ 118

8.7 राजस्थान में पशुपालन 119

8.8 राजस्थान में पशुओं के प्रकार एवं प्रमुख नस्लें 122

8.9 राजस्थान में पशुधन का प्रादेशिक वितरण एवं उसके मुख्य क्षेत्र 124

9. राजस्थान में खान एवं खनिज संसाधन **133-153**

9.1 राजस्थान में खनिज संसाधनों की संभावनाएँ और समस्याएँ 147

10. ऊर्जा के परंपरागत एवं गैर-परंपरागत स्त्रोत **154-175**

10.1 राजस्थान में ऊर्जा के परंपरागत स्त्रोत 154

10.2 राजस्थान में ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्त्रोत 165

11. राजस्थान में प्रमुख उद्योग एवं औद्योगिक विकास की संभावनाएँ **176-191**

12. परिवहन **192-208**

13. जनसंख्या एवं जनजाति **209-232**

अध्याय
1

राजस्थान : सामान्य परिचय
(Rajasthan : General Introduction)

राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियों ने ऐतिहासिक परिवेश को ही नहीं अपितु सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवेश को भी निर्धारित किया है जिससे इसकी विशिष्ट पहचान विश्व में बनी है। कर्नल जेम्स टॉड ने इस प्रदेश को सर्वप्रथम 'राजस्थान' कहा। इस शब्द का प्रयोग उन्होंने अपनी पुस्तक 'एनाल्स एंड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान' में किया है।

स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान राज्य भारत के उत्तर-पश्चिम भाग में 23°3' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश तथा 69°30' पूर्वी देशांतर से 78°17' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। कुल ग्लोबीय स्थिति 7°9' उत्तरी अक्षांश तथा 8°47' पूर्वी देशांतर है। कर्क रेखा राजस्थान के डूँगरपुर एवं बाँसवाड़ा (अन्य स्रोतों में केवल बाँसवाड़ा) ज़िले से गुजरती है। 70° पूर्वी देशांतर रेखा जैसलमेर से होकर गुजरती है।

राज्य की पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से लगती है। इसे **रेडक्लिफ लाइन** कहा जाता है। इसकी लंबाई 1,070 किमी. है। यह अंतर्राष्ट्रीय सीमा राज्य में उत्तर से दक्षिण क्रमशः चार ज़िलों **श्रीगंगानगर** (210 किमी.), **बीकानेर** (168 किमी.), **जैसलमेर** (सर्वाधिक 464 किमी.) एवं **बाड़मेर** (228 किमी.) से लगती है। राजस्थान का कुल क्षेत्रफल **3,42, 239** वर्ग किमी. है। राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है जो **इज़राइल** से लगभग 17 गुना, **इंग्लैंड** से लगभग दुगना तथा **श्रीलंका** से लगभग पाँच गुना से भी अधिक क्षेत्रीय विस्तार रखता है। राजस्थान, भारत के कुल क्षेत्रफल का **10.41 प्रतिशत** है। राजस्थान की आकृति **विषम चतुर्भुज** या पतंग के समान है। उत्तर से दक्षिण के मध्य की लंबाई **826 किमी.** तथा पूर्व से पश्चिम की लंबाई **869 किमी.** है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- अरावली पर्वतीय प्रदेश व दक्षिण-पूर्व पठार प्रदेश में गोंडवाना लैंड के अवशेष हैं।
- सूर्य की सर्वाधिक सीधी किरणें बाँसवाड़ा पर और सर्वाधिक तिरछी किरणें श्रीगंगानगर पर पड़ती हैं।
- डूँगरपूर व बाँसवाड़ा से कर्क रेखा गुज़रती है।
- राजस्थान का 33वाँ ज़िला प्रतापगढ़, उदयपुर संभाग में है एवं इसे 26 जनवरी, 2008 को बनाया गया है।
- राजस्थान भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित है।
- नागौर राजस्थान का धातुनगर कहलाता है।
- तनोट की देवी, थार की वैष्णोदेवी के नाम से जानी जाती है।
- झालावाड़ राजस्थान का नागपुर कहलाता है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा ज़िला जैसलमेर एवं सबसे छोटा ज़िला धौलपुर है।
- राजस्थान का उच्चतम बिंदु गुरु शिखर है जबकि निम्नतम बिंदु सांभर झील है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. राजस्थान के निम्नलिखित ज़िलों को पूर्व से पश्चिम की ओर सही क्रम से व्यवस्थित करें: **RAS (Pre) 2016**

   (i) बूँदी (ii) अजमेर

   (iii) उदयपुर (iv) नागौर

   कूट:

   (1) (i), (ii), (iii), (iv) (2) (ii), (i), (iii), (iv)

   (3) (i), (ii), (iv), (iii) (4) (i), (iii), (ii), (iv)

2. भारत के कुल भू-भाग का कितना प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान में है? **RAS (Pre) 2016**

   (1) 10.4% (2) 7.9%

   (3) 13.3% (4) 11.4%

3. जिस ज़िले से 70° पूर्वी देशांतर रेखा गुज़रती है, वह है– **RAS (Pre) 2010**

   (1) जोधपुर (2) जैसलमेर

   (3) धौलपुर (4) नागौर

4. राजस्थान में किस शहर को 'Suncity' के नाम से जाना जाता है? **RAS (Pre) 2008**

   (1) जोधपुर (2) उदयपुर

   (3) बीकानेर (4) जैसलमेर

5. राजस्थान के संलग्न ज़िले हैं: **RAS (Pre) 2007**

   (1) सिरोही, बाड़मेर, जैसलमेर

   (2) झालावाड़, बूँदी, टोंक

   (3) सिरोही, पाली, नागौर

   (4) चूरू, झुन्झुनूँ, जयपुर

6. निम्नलिखित में से राजस्थान का कौन-सा शहर पाकिस्तानी सीमा के निकट है? **RAS (Pre) 2003**

   (1) बीकानेर (2) जैसलमेर

   (3) गंगानगर (4) हनुमानगढ़

7. दिये गए मानचित्र में उन गाँवों की स्थिति को दर्शाया गया है जहाँ से राजस्थान का उत्तर-दक्षिण व पूर्व-पश्चिम विस्तार नापा जाता है। ये स्थितियाँ *(i), (ii), (iii)* और *(iv)* में अंकित की गई हैं। नीचे दी गई क्रमावली से इनका सही अनुक्रम पहचानिये।

   (1) कटरा, बोरकुंड, सिलान, कोणा

   (2) कोणा, कटरा, सिलान, बोरकुंड

   (3) बोरकुंड, सिलान, कटरा, कोणा

   (4) सिलान, कोणा, कटरा, बोरकुंड

8. निम्नलिखित में से किस ज़िले की सीमा गुजरात को स्पर्श नहीं करती है?
   (1) डूँगरपुर (2) बाड़मेर
   (3) प्रतापगढ़ (4) जालौर
9. पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले ज़िलों की सीमा की लंबाई के घटते हुए क्रम के अनुसार बताइये:
   (1) बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, श्रीगंगानगर
   (2) श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर
   (3) जैसलमेर, बाड़मेर, श्रीगंगानगर, बीकानेर
   (4) बाड़मेर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर
10. राजस्थान का राज्य खेल है:
   (1) कबड्डी
   (2) क्रिकेट
   (3) बास्केटबॉल
   (4) पोलो

उत्तरमाला

1. (3) 2. (1) 3. (2) 4. (1) 5. (3) 6. (3) 7. (1) 8. (3) 9. (3) 10. (3)

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में दीजिये)

1. राजस्थान की ग्लोबीय स्थिति एवं विस्तार।
2. राजस्थान के अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती ज़िले।
3. राजस्थान की संभागीय स्थिति।
4. आदिवासियों का मसीहा।
5. संलग्न राज्य

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 50–50 शब्दों में दीजिये)

1. राजस्थान के संभागों का वर्णन कीजिये।
2. मध्य प्रदेश से संलग्न राजस्थान के ज़िले।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100 या 200 शब्दों में दीजिये)

1. राजस्थान के सीमावर्ती राज्य एवं पड़ोसी देश।

अध्याय
2

भूगर्भिक संरचना (Geological Structure)

भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में राजस्थान राज्य की भूगर्भिक संरचना विशिष्ट है क्योंकि यहाँ एक तरफ प्राचीनतम प्री-कैम्ब्रियन युग की शैलों से निर्मित अरावली पर्वतमाला है तो दूसरी तरफ नवीनतम शैलें एवं वायु द्वारा निक्षेपित की गई मृदा संस्तर है। राजस्थान की भूगर्भिक संरचना में भौमिकीय कालानुक्रम में बदलाव आए हैं, जो यहाँ की शैल संरचना से स्पष्ट होता है। राजस्थान की भूगर्भिक संरचना का उल्लेख क्रमशः आद्य महाकल्प, पुराजीवी महाकल्प, मध्यजीवी महाकल्प एवं नवजीवी महाकल्प के चरणों में किया जा सकता है।

उल्लेखनीय है कि नवीनतम कल्प लगभग दस लाख वर्ष प्राचीन का है जबकि आद्य महाकल्प 4,250 से 45,000 लाख वर्ष प्राचीन है।

आद्य महाकल्प *(Proterozoic era)*

इस महाकल्प को राजस्थान के संदर्भ में क्रमशः **अरावली** पूर्व एवं कैम्ब्रियन पूर्व कल्पों में बाँटा गया है।

(क) अरावली पूर्व *(Pre–aravali)*

यह विश्व के प्राचीनतम पर्वत समूहों में से एक है। वर्तमान में ये पर्वत अवशिष्ट पर्वतों के रूप में रह गए हैं। इस पर्वत समूह का विस्तार उत्तर-पूर्व में रायसीना हिल्स (दिल्ली) से लेकर दक्षिण-पश्चिम में खेड़ब्रह्मा (गुजरात) तक विकर्ण रूप में है। अरावली पूर्व पर्वतों का उत्थान आद्य महाकल्प में 4–5 अरब वर्ष पहले प्री-कैम्ब्रियन काल में हुआ और देहली समूह के निक्षेपण के पश्चात् इन पर्वतों का पुनर्नवीकरण हुआ। अरावली पर्वतमाला के मध्य में विशाल समभिनति है। इस समभिनति में देहली और अरावली समूह की चट्टानें पाई जाती हैं। यह समभिनति पूर्व दिशा में अवस्थित विशाल सीमा भ्रंश के समानांतर विस्तृत है।

ए.एम. हैरोन ने राजस्थान का विधिवत् भू-वैज्ञानिक अध्ययन किया एवं विंध्य-पूर्व अनुक्रम को इस प्रकार प्रस्तुत किया।

मालानी संजाति के आग्नेय शैल/देहली महासमूह/रायली समूह/अरावली महासमूह/पट्टित बुंदेलखंड नीस जटिल शैल शंख/बुंदेलखंड नीस।

बुंदेलखंड नीस, बेड़च घाटी में लगभग 110 किमी. क्षेत्र में चित्तौड़ और भीलवाड़ा के मध्य विस्तृत हैं। इन्हें 'भीलवाड़ा सुपर ग्रुप' भी कहा जाता है। बुंदेलखंड नीस में गुलाबी ग्रेनाइट पाए जाते हैं। इन शैलों में ग्रेनाइट में उपस्थित बायोटाइट एवं हार्न ब्लेंड एपिडोट, क्लोराइट एवं कैसाइट में परिवर्तित पाए जाते हैं। इनमें क्वार्टजाइट, सिस्ट एवं मृण्मय अपराश्म पाए जाते हैं। पट्टित नीस का जटिल संघ मेवाड़ एवं अजमेर में सुविकसित है।

(ब) कैम्ब्रियन पूर्व *(Pre–cambrian)*

इसके अंतर्गत अरावली एवं देहली महासमूह शामिल किये जाते हैं।

1. **अरावली महासमूहः** पट्टित नीस के शीर्ष पर विषम विन्यास में अवस्थित शैलों को 'अरावली महासमूह' में शामिल किया गया है। इन्हें 'अरावली सुपर ग्रुप' भी कहा जाता है। इन शैलों में फायलाइट्स, डोलोमाइट्स, क्वार्टजाइट्स, संगुटिकाश्म चट्टानें पाई जाती हैं। अरावली महासमूह का ऊपरी भाग जो कि फायलाइट एवं क्वाईजाइट शैल-समूहों से निर्मित है मोटे वलन का निर्माण करता है। अरावली महासमूह के विभिन्न शैल-समूहों की संरचना की विभिन्नता के आधार पर इन्हें दो समूहों-झाड़ोल समूह एवं उदयपुर समूह में विभक्त किया जाता है।
2. **देहली महासमूहः** इस प्रकार के शैल राजस्थान के काफी बड़े भू-भाग पर विस्तृत हैं। देहली महासमूह में रायलो, अलवर एवं अजबगढ़ शैल समूह सम्मिलित हैं। रायलो समूह मुख्यतः चूने का पत्थर, क्वार्टजाइट्स, संगमरमर एवं संगुटिकाश्म शैल समूहों में विभाजित है। इस शैल समूह में अरावली पूर्व की बेन्डेड नीस कॉम्पलेक्स शैलों पर विसंगत रूप में स्थित है।

अध्याय
3

भू-आकृतिक प्रदेश (Geographical Region)

भारतीय उपमहाद्वीप की वर्तमान भू-वैज्ञानिक संरचना व इसके क्रियाशील भू-आकृतिक प्रक्रम मुख्यत: अंतर्जनित व बहिर्जनित तथा प्लेटों के क्षैतिज संचरण की अंत:क्रिया के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आए हैं। राजस्थान को भौगोलिक प्रदेशों में विभक्त करने का कार्य वी.सी. मिश्रा तथा आर.एल. सिंह ने किया।

भौगोलिक प्रदेश *(Geographical region)*

प्रो. वी.सी. मिश्रा ने राजस्थान को सात भौगोलिक प्रदेशों में विभक्त किया तथा डॉ. रामलोचन सिंह ने संपूर्ण राजस्थान को दो वृहद् प्रदेशों एवं उसके चार उप-प्रदेशों तथा 12 (बारह) लघु प्रदेशों में विभाजित किया।

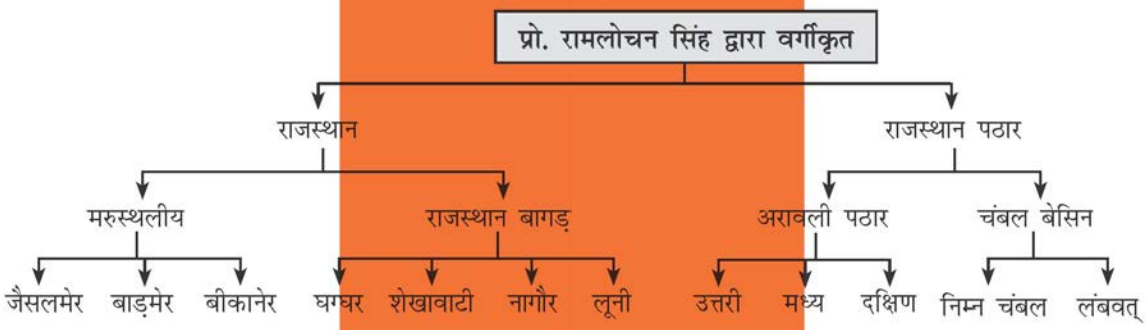

प्रो. वी.सी. मिश्रा द्वारा वर्गीकृत

(i) पश्चिमी शुष्क प्रदेश

इसका विस्तार बाड़मेर, बीकानेर, जैसलमेर, चूरू, जोधपुर, नागौर तक है। इस क्षेत्र की विशेषता मरुस्थलीय भूमि, अम्ल वर्षा, वनस्पति का अभाव, वार्षिक वर्षा 15–25 सेमी. तक होती है।

(ii) अर्द्ध शुष्क प्रदेश

इसका विस्तार झुन्झुनूँ, चूरू, पाली, नागौर, सीकर, जालौर व जोधपुर के कुछ क्षेत्र तक है। इस क्षेत्र में वार्षिक वर्षा 25–30 सेमी. तथा बहुत कम वनस्पति पाई जाती है।

(iii) नहरी प्रदेश

इस क्षेत्र का विस्तार बीकानेर, जैसलमेर तथा श्रीगंगानगर तक है।

यह क्षेत्र पहले मरुस्थल था परंतु धीरे-धीरे सिंचाई से सिंचित हो गया।

(iv) अरावली प्रदेश

इस क्षेत्र में अच्छी वर्षा होती है तथा इसका विस्तार उदयपुर, पाली, सिरोही तथा डूँगरपुर तक है।

(v) पूर्वी कृषि औद्योगिक प्रदेश

इस क्षेत्र का विस्तार अजमेर, सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, बूँदी, अलवर, धौलपुर, कोटा, झालावाड़ तथा चित्तौड़गढ़ तक है। यह क्षेत्र मैदानी व पठारी अर्द्धशुष्क प्रदेश है।

(vi) दक्षिणी-पूर्वी कृषि प्रदेश

इसका विस्तार बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूँगरपुर, कोटा तथा झालावाड़ तक है। यहाँ वर्षा 50 सेमी. से अधिक होती है।

(vii) चंबल बीहड़ प्रदेश

इसका विस्तार सवाई माधोपुर तथा धौलपुर तक है।

इस क्षेत्र में चंबल के बीहड़ आते हैं तथा वार्षिक वर्षा 50 सेमी. से अधिक होती है।

अध्याय
4

अपवाह तंत्र एवं जल संसाधन
(Drainage System and Water Resources)

4.1 अपवाह तंत्र *(Drainage System)*

अपवाह तंत्र से तात्पर्य नदियाँ एवं उनकी सहायक नदियों से है जो एक तंत्र अथवा प्रारूप का निर्माण करती हैं। राजस्थान के अपवाह तंत्र को अरावली पर्वत श्रेणियाँ निर्धारित करती हैं। अरावली पर्वत श्रेणियाँ राजस्थान में एक जल विभाजक हैं और राज्य में बहने वाली नदियों को दो भागों में विभक्त करती हैं। पूर्व की ओर का जल प्रवाह बंगाल की खाड़ी में और पश्चिम की ओर का जल प्रवाह अरब सागर में जाता है।

राजस्थान में बहने वाली नदियों को निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

- अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ (17.1%)
- बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ (22.4%)
- आंतरिक प्रवाह की नदियाँ (60.2%)

A. अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ *(Rivers falling into Arabian sea)*

इनमें लूनी, पश्चिमी बनास, माही और साबरमती आदि प्रमुख नदियाँ हैं।

1. लूनी नदी

उद्गम– नाग पहाड़ी (अजमेर)

मुहाना– कच्छ के रण में विलुप्त।

अपवाह क्षेत्र के ज़िले– नागौर, अजमेर, जोधपुर, पाली, बाड़मेर, जालौर

उपनाम– लवणवती, सागरमती, मरुआशा

अपवाह क्षेत्र या नदी बेसिन-35 हज़ार वर्ग किमी.

सहायक नदियाँ– जवाई, लीलड़ी, जोजड़ी, मीठड़ी, सूकड़ी, बांडी, सागी।

विशेष-लूनी नदी केवल वर्षा काल में ही प्रवाहित होती है।

- लूनी नदी का पानी बालोतरा के बाद खारा हो जाता है, इसलिये इसे आधी खारी व आधी मीठी नदी भी कहते हैं।
- लूनी की सहायक नदी जवाई पर सुमेरपुर (एरिनपुरा) में जवाई बांध बना है। इस बांध को 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' भी कहते हैं। जवाई नदी बाड़मेर के निकट गुड़ा नामक स्थान के पास लूनी में मिल जाती है।
- लूनी में दाईं ओर से मिलने वाली एकमात्र सहायक नदी जोजड़ी है।

2. पश्चिमी बनास

- उद्गम– 'नया सानवारा' (सिरोही)
- मुहाना– कच्छ की खाड़ी में विलुप्त
- सहायक नदियाँ– सीपू, सेवरन, कूकड़ी सूकली।

3. माही नदी

- उद्गम– महू की पहाड़ियाँ (मध्य प्रदेश)
- मुहाना– खंभात की खाड़ी (गुजरात)

अध्याय
5

राजस्थान की जलवायु (Climate of Rajasthan)

किसी भी राज्य की जलवायु का विस्तृत अध्ययन करने के लिये वहाँ का तापमान, वर्षा, वायुदाब तथा पवनों की गति एवं दिशा का ज्ञान होना आवश्यक होता है। जलवायु के इन विभिन्न तत्त्वों पर अक्षांशीय विस्तार, उच्चावच तथा जल व स्थल के वितरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। राजस्थान की जलवायु शुष्क से उप-आर्द्र अथवा उप-उष्ण है। राजस्थान की जलवायु में प्रादेशिक विविधता पाई जाती है तथा इसका कारण वे तत्त्व हैं जो यहाँ की जलवायु को प्रभावित करते हैं।

5.1 जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक *(Factors Affecting the Climate)*

कारक	प्रभाव
स्थिति एवं अक्षांशीय विस्तार	• राजस्थान 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांशों के मध्य स्थित है। कर्क रेखा बाँसवाड़ा-डूँगरपुर ज़िलों से गुज़रती है। • अधिकांश राज्य उपोष्णकटिबंध में स्थित हैं जहाँ ग्रीष्मकाल में गर्मी अधिक तथा शीतकाल में तापमान सामान्य होता है।
समुद्र से दूरी	• राजस्थान की दूरी समुद्र से अधिक है। इस कारण यहाँ की जलवायु पर समुद्र का प्रभाव न्यून है। • यहाँ की जलवायु में महाद्वीपीय जलवायु के लक्षण पाए जाते हैं, जो गर्म एवं शुष्क होती है तथा जिसमें नमी की कमी होती है।
धरातल/ उच्चावच	• राजस्थान का अधिकांश भाग समुद्र तल से 370 मी. से कम ऊँचा है। केवल पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र ही 370 मी. से अधिक ऊँचे पाए जाते हैं। • पश्चिमी राजस्थान में थार का मरुस्थल है, जहाँ दिन अत्यधिक गर्म व रातें अपेक्षाकृत ठंडी होती हैं।
पवन	• अरब सागरीय मानसून राजस्थान में अधिकांशत: बिना बरसे ही निकल जाता है एवं बंगाल की खाड़ी वाली मानसूनी हवाएँ राजस्थान तक पहुँचते-पहुँचते अपनी नमी खो देती हैं। • पश्चिम से आने वाली हवाओं के साथ शीतोष्णकटिबंधीय चक्रवात जब राजस्थान से गुज़रते हैं तो दिसंबर-जनवरी में सीमित मात्रा में वर्षा करते हैं, जिसे 'मावट' कहते हैं।
अरावली पर्वत	• अरब सागरीय मानसून अरावली के समानांतर गुज़र जाने के कारण बहुत कम वर्षा करता है। • बंगाल की खाड़ी का मानसून अरावली तक पहुँचते-पहुँचते अपनी नमी खो देता है तथा अरावली का वृष्टि छाया वाला क्षेत्र न्यून वर्षा प्राप्त करता है। • अरावली शृंखला पश्चिम से आने वाली गर्म हवाओं से पूर्वी राजस्थान को बचाए रखती है।

5.2 राजस्थान की जलवायु की प्रमुख विशेषताएँ *(Main Characterstics of Climate of Rajasthan)*

राजस्थान की जलवायु की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

- राजस्थान में तापमान एवं वर्षा की स्थिति के अनुसार इसमें आर्द्र जलवायु, शुष्क जलवायु, अति-आर्द्र जलवायु प्रदेश दिखाई देता है।

अध्याय
6

प्राकृतिक वनस्पति एवं मृदाएँ
(Natural Vegetation and Soils)

'वनस्पति' से तात्पर्य वृक्षों, झाड़ियों, घासों, बेलों और लताओं आदि के समूह अथवा पौधों की विभिन्न प्रजातियों से है जो एक निश्चित पर्यावरण में पाई जाती हैं। वनस्पति और वन में एक मूल अंतर यह है कि वन व्यापक रूप से संपूर्ण वनस्पतियों, वन्यजीवों एवं आस-पास के वातावरण को समाहित करता है। प्राकृतिक वनस्पति का प्रभाव प्राकृतिक तत्त्वों, जैसे– मृदा, जलवायु के साथ-साथ मानव एवं जंतुओं पर भी पड़ता है।

6.1 वनों के प्रकार *(Types of Forests)*

राजस्थान में जलवायु एवं उच्चावच की भिन्नता के कारण प्रशासनिक रूप से वनों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है।

प्रदेश में कुल अभिलेखित वन क्षेत्र 32737 वर्ग किमी. है। राजस्थान वन अधिनियम, 1953 के प्रावधानों के अनुरूप वैधानिक दृष्टि से उक्त वन क्षेत्र को निम्नानुसार वर्गीकृत किया गया है–

क्र.सं.	वैधानिक स्थिति	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	प्रतिशत
1.	आरक्षित वन (Reserved Forest)	12476.07	38.11
2.	रक्षित वन (Protected Forest)	18214.86	55.64
3.	अवर्गीकृत वन (Unclassed Forest)	2046.06	6.25
	कुल योग	32737	100.00

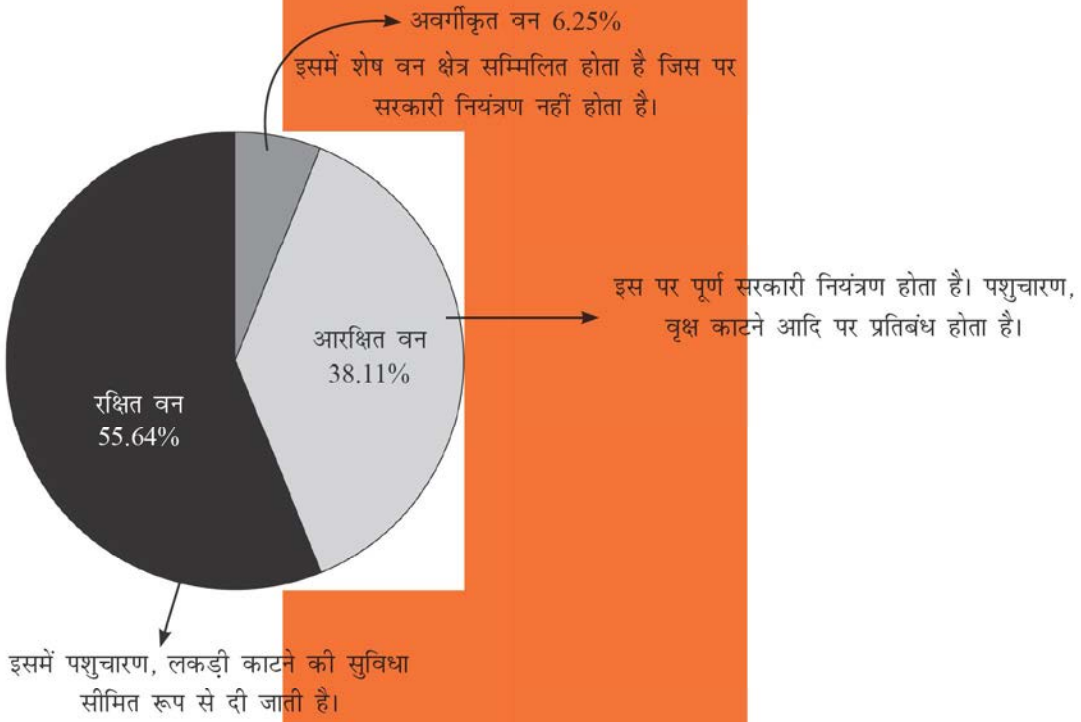

राजस्थान की विविधतापूर्ण एवं समृद्ध वन संपदा को वनस्पतियों के आधार पर अग्रानुसार वर्गीकृत किया गया है।

अध्याय
7

वन्य जीव एवं जैव विविधता (Wildlife and Biodiversity)

भारत एक विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल वाला देश है। इसकी विशेष अवस्थिति, जलवायु विविधता, मनोहर और विविध पारिस्थितिकी प्रणाली के कारण वन्य जीव-जंतुओं का यह विशेष आवास स्थल है। वन्य जीव-जंतु के अंतर्गत प्राकृतिक परिवेश में रहने वाले प्राणी, जलीय या भू-वनस्पतीय जीव आदि को शामिल करते हैं। भारत विश्व के 12 मेगा जैव विविधता संपन्न देशों में शामिल है। यहाँ उत्तर-पूर्व के सदाबहार वन से लेकर हिमालय की पर्वत श्रेणियाँ एवं राजस्थान की मरु भूमि का विस्तार है, जिसके फलस्वरूप वन्य जीव-जंतुओं में काफी विविधताएँ देखी जा सकती हैं।

7.1 राजस्थान में वन्य जीव *(Wildlife in Rajasthan)*

राजस्थान की जलवायवीय विविधता, अरावली पर्वत श्रेणियाँ और दक्षिण-पूर्व के हरे-भरे जंगलों आदि के फलस्वरूप वन्य जीव-जंतुओं में काफी विविधता देखी जा सकती है। वनीकरण की दृष्टि से कमज़ोर होने के बावजूद राजस्थान को वन्य जीव-जंतुओं के मामले में देश में असम के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है।

राजस्थान एक ऐसा राज्य है जहाँ मांसाहारी एवं शाकाहारी पशुओं, रेंगने वाले जीवों, विभिन्न प्रकार के पक्षियों आदि का निवास पाया जाता है।

मांसाहारी पशुओं में बाघ, सियार, लोमड़ी, तेंदुआ, जंगली कुत्ता, जरख, जंगली बिल्ली, रेगिस्तानी बिल्ली, बिज्जू, नेवला आदि पाया जाता है। **बाघ** मुख्यतया अलवर, धौलपुर, भरतपुर, करौली, कोटा, सिरोही, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, बूँदी, सवाई माधोपुर, डूँगरपुर आदि क्षेत्रों में पाया जाता है, जबकि **तेंदुआ** मुख्यतया भरतपुर, अलवर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ तथा जालौर आदि क्षेत्रों में पाया जाता है। **चीता** राजस्थान के अलवर, उदयपुर, भीलवाड़ा, डूँगरपुर, कोटा, करौली के जंगलों में पाया जाता है। शाकाहारी पशुओं में काला हिरण, नीलगाय, साँभर, चिंकारा, चीतल, भालू, हिरण, जंगली सूअर, बंदर, लंगूर आदि पाए जाते हैं।

काला हिरण मुख्य रूप से भरतपुर, जयपुर, सिरोही, बाड़मेर, अजमेर एवं कोटा में पाया जाता है।

नीलगाय मुख्यतया किशनगढ़, भरतपुर, करौली, जोधपुर, कोटा, झालावाड़ और गंगानगर ज़िलों में पाई जाती है।

चिंकारा मुख्यतया भरतपुर, सवाई माधोपुर, जालौर, जयपुर, जोधपुर तथा सिरोही में, जबकि **साँभर** भरतपुर, अलवर, उदयपुर, सवाई माधोपुर, डूँगरपुर और बाँसवाड़ा आदि ज़िलों में पाया जाता है। **चीतल** अधिकतर भरतपुर में तथा **खरगोश** राजस्थान के अनेक ज़िलों में जहाँ वन एवं झाड़ियाँ हैं, पाया जाता है।

- राजस्थान में रेंगने वाले जीवों में मगरमच्छ, घड़ियाल, अजगर, सांडा, नाग, कोबरा, करैट तथा वाइपर आदि पाए जाते हैं।,
- पक्षियों की दृष्टि से भी राजस्थान काफी संपन्न है। देश का सबसे दुर्लभ पक्षी **गोडावण राजस्थान के बीकानेर, बाड़मेर और जैसलमेर आदि ज़िलों में पाया जाता है।** गोडावण राजस्थान का राज्य पक्षी भी है जो दुर्लभ प्रजाति की श्रेणी में शामिल है।
- इसके अतिरिक्त मोर, नीलकंठ, तीतर, भट तीतर, काला तीतर, कौआ, चील, गिद्ध, कबूतर आदि पक्षियों से राजस्थान संपन्न है।
- **भरतपुर के घना पक्षी विहार को पक्षियों** का स्वर्ग कहा जाता है। यहाँ शीतकाल में साइबेरियन क्रेन नामक प्रवासी पक्षी आते हैं, जो आकर्षण का प्रमुख केंद्र बन जाते हैं। इसी प्रकार फलौदी के निकट खींचन में कुरजां पक्षियों का प्रवास होता है जो पर्यटकों के लिये आकर्षण का केंद्र है।
- इसके अतिरिक्त अन्य पक्षियों में काज, सुर्खाब शपलर, पिनटेल, पोचार्ड मलार्ड, करकरा, नील मुर्गी, चमचा, मंड जलमुर्गी और सारस यहाँ के प्रमुख पक्षी हैं।
- राजस्थान जंगली पशु-पक्षियों का प्रमुख आवास है, पानी के पक्षियों के लिये केवलादेव घना पक्षी विहार राष्ट्रीय उद्यान को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है।

अध्याय
8

राजस्थान में कृषि एवं पशुपालन (Agriculture and Animal Husbandry in Rajasthan)

8.1 राजस्थान में कृषि *(Agriculture in Rajasthan)*

कृषि राजस्थान की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। यहाँ की 70% जनसंख्या कृषि एवं पशुपालन संबंधी कार्यों में संलग्न है। कृषि न केवल ग्रामीण जनसंख्या के व्यवसाय एवं आय का आधार है बल्कि औद्योगिक कच्चे माल का स्रोत और राज्य की अर्थव्यवस्था की आधारशिला भी है। राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 49.53% कृषि उपयोग में आता है।

राजस्थान में पशुपालन, विशेषकर शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में केवल कृषि की सहायक गतिविधि ही नहीं है, अपितु यह एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि भी है जो कि सूखे एवं अकाल की स्थिति में किसानों को अत्यधिक सुरक्षा कवच प्रदान करती है।

राज्य में कृषि की आदर्श दशाओं की अनुपलब्धता और विपरीत एवं विविधतायुक्त भौगोलिक परिस्थितियों में भी कृषि का पर्याप्त विकास हुआ है एवं अनेक क्षेत्र कृषि उत्पादन में अग्रणी भी हुए हैं। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में भी कृषि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। राजस्थान की कृषि अनेक कारकों द्वारा नियंत्रित होती है जो कृषि क्षेत्रों के विस्तार में बाधक हैं तथा जिनके कारण कृषि आज भी पिछड़ी हुई है। कृषि को प्रभावित करने वाले कारक इस प्रकार से हैं–

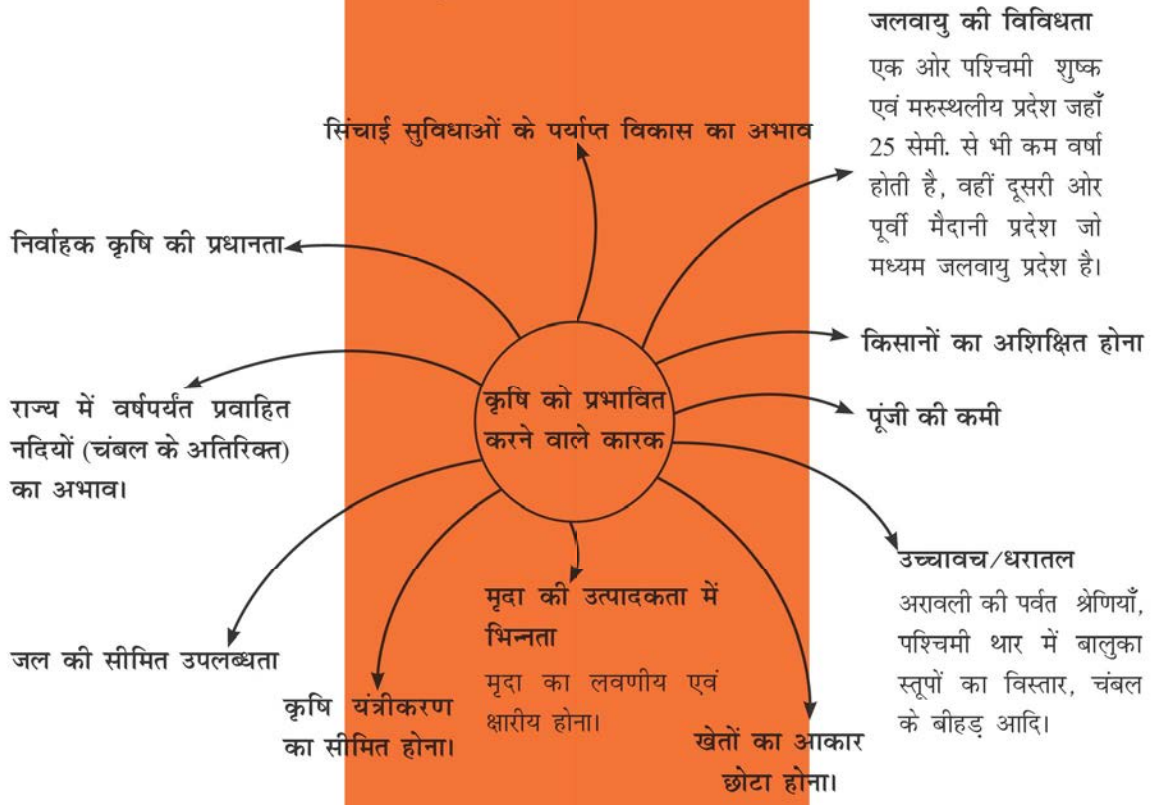

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेक योजनाओं के माध्यम से कृषि विकास को बढ़ावा दिया गया, जिनके परिणामस्वरूप कृषि का समुचित विकास हुआ। इन विकास बिंदुओं को निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता है–

अध्याय
9

राजस्थान में खान एवं खनिज संसाधन
(Mines and Minerals Resources in Rajasthan)

खनिज से तात्पर्य ऐसे पदार्थों से होता है जो भिन्न-भिन्न दशाओं में प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित (प्राकृतिक-रूप से प्राप्त) होते हैं तथा जिनका एक निश्चित रासायनिक संघटन होता है। ये खनिज पदार्थ सभी स्थानों पर समान रूप से वितरित नहीं हैं। ये आग्नेय, अवसादी, कायांतरित शैल समूहों तथा किसी विशेष क्षेत्र में संकेंद्रित होते हैं। भारत में राजस्थान विभिन्न प्रकार के खनिजों की उपलब्धता के कारण इन संसाधनों की दृष्टि से एक समृद्ध राज्य है, जिसके कारण इसे 'खनिजों का अजायबघर (संग्रहालय)' कहा जाता है। राजस्थान में खनिजों की विविधता का मूल कारण इसकी प्राचीन तथा विविधतापूर्ण भू-गर्भिक संरचना है। खान एवं भू-विज्ञान विभाग, राजस्थान-वार्षिक प्रशासनिक प्रतिवेदन जनवरी, 2017 के अनुसार- राजस्थान में 81 प्रकार के खनिजों की उपलब्धता (प्राप्ति) है, जिसमें 57 खनिजों का ही व्यायसायिक खनन होता है।

राजस्थान का देश के कुल खनिज उत्पादन में लगभग 22% का योगदान रहा है। इसके कुछ प्रमुख खनिजों का योगदान इस प्रकार है, जैसे– जास्पर, जस्ता, गार्नेट- वोलस्टोनाइट का 100%, एस्बेस्टॉस का लगभग 98%, फ्लोराइट का लगभग 96%, जिप्सम तथा पोटाश का लगभग 94%, सीसा, जस्ता, ऑकर, बॉलक्ले तथा कैल्साइट का लगभग 90%, सोपस्टोन का लगभग 87%, सिल्वर का लगभग 81%, सीसा का लगभग 80%, रॉक फॉस्फेट का लगभग 74%, सैंडस्टोन, कोटा स्टोन, फेल्सपार का लगभग 70%, सिलिसियस अर्थ का लगभग 72%, मार्बल का लगभग 64% आदि। खनिज भंडारों की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड राज्य के बाद दूसरा स्थान है। राज्य के GDP में खनन का योगदान 5% है। खनन क्षेत्र में होने वाली आय की दृष्टि से राजस्थान का देश में 5वाँ स्थान है। 2014–15 में देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का हिस्सा 9% है। देश की सर्वाधिक खनिज खानें राजस्थान में हैं। वर्तमान समय में राज्य में उपलब्ध विविध प्रकार के खनिजों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

राजस्थान में उपलब्ध खनिज भंडार

धात्विक खनिज	अधात्विक खनिज	अन्य खनिज
धात्विक खनिजों में धातु कच्चे रूप में होती है तथा इनको रासायनिक प्रक्रिया से परिष्कृत करके उनके मूल खनिज अलग किये जाते हैं। धातु एक कठोर पदार्थ होती है, जो ऊष्मा तथा विद्युत की सुचालक होती है। धात्विक खनिज दो प्रकार के होते हैं।	अधात्विक खनिजों में धातु नहीं पाई जाती है। इस प्रकार के खनिज अवसादी शैल समूहों में पाए जाते हैं। इन्हें रासायनिक प्रक्रिया द्वारा परिष्कृत करके मूल खनिजों से अलग नहीं किया जाता है। इनका प्रयोग प्राकृतिक रूप में ही किया जाता है तथा ये अधिकांश औद्योगिक प्रक्रियाओं में ही प्रयोग होते हैं। अत: इन्हें 'औद्योगिक खनिज' भी कहा जाता है। इन खनिजों को अलग-अलग भागों में बाँटकर देखा जा सकता है, जैसे–	लिग्नाइट, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस आदि।
	(i) उच्चतापसह-ऊष्मारोधी तथा मृत्तिका खनिज एस्बेस्टॉस, काँच बालुका, मैग्नेसाइट, चीनी मृत्तिका फेल्सपार, क्वार्ट्ज, वर्मीकूलाइट वोलस्टोनाइट, अग्निसह-मिट्टी, डोलोमाइट	

अध्याय
10

ऊर्जा के परंपरागत एवं गैर-परंपरागत स्त्रोत (Conventional and Non–Conventional Sources of Energy)

ऊर्जा संसाधन आज के युग की प्राथमिक आवश्यकता है, क्योंकि किसी भी देश या प्रदेश का आर्थिक विकास वहाँ पर उपलब्ध ऊर्जा संसाधनों पर निर्भर करता है। आज वर्तमान समय में 'मशीनी युग' के आविर्भाव से जीवन की लगभग सभी क्रियाएँ (जैसे- घरेलू कार्य, उद्योग, परिवहन, कृषि आदि) ऊर्जा से ही संचालित होती हैं। यह ऊर्जा हमें दो स्त्रोतों से प्राप्त होती है।

ऊर्जा के दो स्त्रोत

ऊर्जा के परंपरागत स्त्रोत

यह ऊर्जा के ऐसे स्त्रोत हैं, जो लंबे समय से सामान्य उपयोग में लाए जा रहे हैं। ईंधन तथा जीवाश्मी ईंधन इसके दो मुख्य स्त्रोत हैं। जीवाश्मी ईंधन, जैसे- कोयला, पेट्रोलियम/खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, जल विद्युत, भूतापीय-ऊर्जा आदि। राजस्थान में जल विद्युत, तापीय विद्युत तथा गैस विद्युत की कुल अधिष्ठापित क्षमता 2017–18 में 6810.79 मेगावाट रही है।

ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्त्रोत

जीवाश्मी ईंधनों के निरंतर बढ़ते उपयोग के कारण ऊर्जा के जो वैकल्पिक स्त्रोत उभरकर सामने आ रहे हैं, उन्हें ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्त्रोत कहा जाता है। ये पर्यावरणीय मित्र तथा गैर-प्रदूषक होते हैं। जैसे- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायो गैस, ज्वारीय ऊर्जा, कृषि अपशिष्ट से प्राप्त ऊर्जा आदि।

राजस्थान राज्य में दोनों प्रकार के ऊर्जा स्त्रोतों की उपलब्धता है, यद्यपि कुछ का पर्याप्त विकास नहीं हुआ है। किंतु वर्तमान समय में ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि राज्य-सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है, जिसमें आशानुरूप सफलता भी प्राप्त हुई है।

10.1 राजस्थान में ऊर्जा के परंपरागत स्त्रोत *(Conventional Sources of Energy in Rajasthan)*

कोयला *(Coal)*

ऊर्जा के परंपरागत स्त्रोतों में कोयले का प्रमुख स्थान रहा है। कोयला एक जीवाश्मी ईंधन है, जो लाखों वर्ष पूर्व विशाल फर्न और दलदल के पृथ्वी की परतों में दबने से बना है। प्राचीन समय से ही इसका उपयोग ऊर्जा प्राप्ति के लिये किया जा रहा है, जो वर्तमान में भी जारी है। कोयले से प्राप्त ऊर्जा को 'तापीय विद्युत ऊर्जा' भी कहा जाता है और इस विद्युत को उत्पादित करने में भी इसका उपयोग किया जा रहा है। कोयले में कार्बन मौजूद होता है और कार्बन की मात्रा के आधार पर इसकी उत्तमता का पता चलता है। इस आधार पर कोयले की चार किस्में देखने को मिलती हैं, जो इस प्रकार हैं–

अध्याय
11

राजस्थान में प्रमुख उद्योग एवं औद्योगिक विकास की संभावनाएँ (Prospects of Industrial Development and Major Industries in Rajasthan)

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है। यह कृषि, पशु संपदा तथा खनिज संसाधनों की दृष्टि से जहाँ एक समृद्ध राज्य है, वहीं यह अन्य राज्यों की अपेक्षा औद्योगिक रूप से पिछड़ा राज्य रहा है। इसके पिछड़ेपन के लिये अनेक भौगोलिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियाँ उत्तरदायी रही हैं। ये परिस्थितियाँ उद्योगों की स्थापना में सकारात्मक योगदान नहीं कर पाती हैं। यही कारण है कि स्वतंत्रता के समय राज्य में उद्योग नगण्य मात्र थे।

राजस्थान निर्माण के समय राज्य में मात्र 11 वृहद् उद्योग, 7 सूती वस्त्र उद्योग, 2 सीमेंट व 2 चीनी उद्योग तथा 207 पंजीकृत फैक्ट्रियाँ थीं। वर्ष 1978 में केंद्र प्रवर्तित योजना 'जिला उद्योग केंद्र' के तहत राजस्थान में वर्तमान में 36 जिला उद्योग केंद्र व 7 उपकेंद्र (ब्यावर, आबूरोड़, फालना, बालोतरा, किशनगढ़, मकराना तथा नीमराना) कार्यरत हैं। ये जिला उद्योग केंद्र तथा उपकेंद्र उद्यमियों को इनपुट तथा अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु कार्यरत हैं। औद्योगिक विकास को बाधा पहुँचाने वाली परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं।

औद्योगिक विकास में बाधक परिस्थितियाँ

- प्रतिकूल धरातलीय स्वरूप
  - इसके अंतर्गत राज्य के आधे से अधिक भू-भाग में अरावली की पर्वत श्रृंखलाएँ, मरुस्थल एवं अर्द्ध-मरुस्थलीय दशाएँ तथा अन्य प्राकृतिक बाधाएँ विद्यमान हैं।
- विरासत में मिला औद्योगिक पिछड़ापन
  - देशी रियासतों द्वारा औद्योगिक विकास की उपेक्षा
- पानी का अभाव
  - वर्षा की कमी तथा चंबल नदी के अतिरिक्त वर्ष पर्यंत प्रवाहित होने वाली नदियों का अभाव
- औद्योगिक कच्चे माल की सीमित उपलब्धता
  - तकनीकी ज्ञान का अभाव
    - पूंजी निवेश की सीमित मात्रा
- ढाँचागत सुविधाओं तथा सीमित बाज़ार का अभाव
  - परिवहन साधनों का अभाव
    - कच्चे माल का अभाव

उपर्युक्त कठिनाइयों के बावजूद राज्य में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिये राज्य सरकार ने अनेक सकारात्मक कदम उठाए हैं, क्योंकि औद्योगीकीकरण देश के समग्र विकास को प्रोत्साहित करने के लिये महत्त्वपूर्ण तरीकों में से एक माना जाता है, जिससे राज्य के औद्योगिक विकास को नई दिशा मिली है।

राजस्थान के प्रमुख उद्योगों का वर्गीकरण

- वस्त्र उद्योग
  - सूती वस्त्र उद्योग
  - ऊनी वस्त्र उद्योग
- चीनी उद्योग
- सीमेंट उद्योग
- इंजीनियरिंग उद्योग
- धातु उद्योग
  - जस्ता
  - तांबा
- नमक उद्योग
- काँच उद्योग

1. वस्त्र उद्योग *(Textile Industry)*

(i) सूती वस्त्र उद्योग

भारत में प्रथम सूती मिल 1818 में 'घुसरी' (कलकत्ता) में स्थापित की गई। यह मिल असफल रही, परंतु देश की प्रथम सफल सूती वस्त्र मिल वर्ष 1854 में कवास जी डाबर के द्वारा मुंबई में स्थापित की गई। राजस्थान में सूती वस्त्र

अध्याय
12

परिवहन (Transport)

देश के आर्थिक विकास में तृतीयक क्षेत्र के एक महत्त्वपूर्ण भाग के रूप में परिवहन का अत्यधिक महत्त्व है। आधुनिक विश्व की जटिल बनावट में प्रगति हेतु कोई भी देश परिवहन क्षेत्र के तीव्र विकास की अनुपस्थिति में आर्थिक समृद्धि प्राप्त करने के संबंध में सोच भी नहीं सकता है। किसी भी क्षेत्र के तीव्र विकास में परिवहन एक आवश्यक मूलभूत सुविधा है। प्राकृतिक संसाधनों के अभाव में किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास धीमा हो सकता है। परिवहन को किसी भी राज्य के समग्र विकास के लिये एक आवश्यक घटक के रूप में स्वीकार किया गया है।

परिवहन क्षेत्र में सड़क, रेल और वायु परिवहन महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

सड़क परिवहन *(Road transport)*

वर्ष 1949 में राजस्थान राज्य में सड़कों की कुल लंबाई मात्र 13,553 किमी. थी जो मार्च 2017 तक बढ़कर 2, 26, 853.86 किमी. हो गई है। राज्य में सड़कों का घनत्व 31 मार्च, 2017 तक 66.29 किमी. प्रति 100 वर्ग किमी. रहा है।

सड़कों का वर्गीकरण

भारतीय सड़क कॉन्ग्रेस (Indian Roads Congress) ने भारत में सड़कों को 5 श्रेणियों में बाँटा है–

1. राष्ट्रीय राजमार्ग
2. राज्य राजमार्ग
3. मुख्य ज़िला सड़कें
4. अन्य ज़िला सड़कें
5. ग्रामीण सड़कें

राष्ट्रीय राजमार्ग

ये सड़कें राष्ट्रीय राजधानी एवं राज्यों तथा केंद्र-शासित प्रदेशों की राजधानियों तथा पड़ोसी देशों को सड़क मार्ग से जोड़ती हैं। सुरक्षा की दृष्टि से भी इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है। इनके संचालन की ज़िम्मेदारी केंद्र सरकार एवं भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) की होती है।

राज्य राजमार्ग

ये राज्य के मुख्य मार्ग हैं। ये प्रदेशों की राजधानियों को ज़िला मुख्यालय तथा अन्य राज्यों से जोड़ते हैं। इनके निर्माण की प्रक्रिया एवं कार्यरूप राष्ट्रीय राजमार्ग के समान ही होते हैं, क्योंकि ये सड़कें भी पर्याप्त यातायात का बोझ उठाती हैं।

मुख्य ज़िला सड़कें

ये सड़कें ज़िला केंद्रों को ज़िले के अन्य प्रमुख स्थानों तथा अन्य ज़िला केंद्रों से जोड़ती हैं। इन सड़कों की डिज़ाइन मानक राष्ट्रीय राजमार्ग व राज्य राजमार्ग से निम्नतर होते हैं।

अन्य ज़िला सड़कें

ये सड़कें ज़िले के ग्रामीण क्षेत्रों एवं कस्बों को मुख्य ज़िला सड़कों से जोड़ती हैं।

ग्रामीण सड़कें

ये सड़कें ग्रामीण केंद्रों को निकटतम मुख्य सड़क एवं नज़दीकी कस्बों तथा शहरों से जोड़ती हैं।

अध्याय
13

जनसंख्या एवं जनजाति (Population and Tribes)

किसी निश्चित क्षेत्र एवं समय में निवास करने वाले मानवों की कुल संख्या को जनसंख्या कहते हैं। जनसंख्या का निर्धारण जनगणना के माध्यम से किया जाता है। भारत में सर्वप्रथम जनगणना 1872 ई. में 'लॉर्ड मेयो' के कार्यकाल में हुई थी। 1881 ई. में 'लॉर्ड रिपन' के कार्यकाल से इसे प्रत्येक दस वर्ष के अंतराल पर कराया जाने लगा। 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या का 5.56 प्रतिशत है। राजस्थान में जनसंख्या घनत्व में बहुत-सी विविधताएँ पाई जाती हैं, जहाँ पश्चिमी राजस्थान के 60 प्रतिशत क्षेत्रफल में 40 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, वहीं पूर्वी मैदान उच्च घनत्व वाला क्षेत्र है। जनसंख्या बसाव पर भौगोलिक विशेषताओं का प्रभाव विशेष रूप से पड़ता है।

जनसंख्या *(Population)*

2011 की जनगणना के अंतिम आँकड़ों के अनुसार राजस्थान की जनसंख्या 6,85,48,437 है। जनसंख्या से संबंधित कुछ प्रमुख तथ्य इस प्रकार हैं–

तथ्य	भारत	राजस्थान
जनसंख्या	121.09 करोड़	6.85 करोड़ (देश में 8वाँ)
पुरुष जनसंख्या	62,37,24,248 (51.47%)	3.55 करोड़ (51.86%)
महिला जनसंख्या	58,64,69,174 (48.53%)	3.29 करोड़ (48.14%)
लिंगानुपात	943	928 (देश में 22वाँ)
घनत्व	382	200 (देश में 19वाँ)
लिंगानुपात (0–6)	919	888 (देश में 26वाँ)
साक्षरता	74.04	66.1% (27वाँ देश में)
पुरुष साक्षरता	82.14	79.2% (19वाँ देश में)
महिला साक्षरता	65.46	52.1% (28वाँ देश में)
दशकीय वृद्धि दर	17.72%	21.3%
वार्षिक वृद्धि दर	1.7%	2.13%
ग्रामीण जनसंख्या	83.37 करोड़	5.15 करोड़ (75.1%)
शहरी जनसंख्या	37.71 करोड़	1.70 करोड़ (24.9%)

कुल जनसंख्या-राजस्थान (जनगणना 2011)

		संपूर्ण			प्रतिशत %		
		कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी
(i) कुल जनसंख्या							
	कुल	68548437	51500352	17048085	100.0	75.1	24.9
	पुरुष	35550997	26641747	8909250	100.0	74.9	25.1
	महिला	32997440	24858605	8138835	100.0	75.3	24.7
(ii) 0–6 वर्ष आयु वर्ग की जनसंख्या							
	कुल	10649504	8414883	2234621	15.5	16.3	13.1

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456